M.A. PREVIOUS YEAR EXAMINATION, 2011
(Correspondence Course)
Subject : Jainology and Comparative Religion & Philosophy
PAPER - III : Dhyan Yoga and Karma Mimansa

Time : 3.00 Hrs. MM : 80

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Q. 1. Elucidate (illuminate) Acharya Haribhadra's contribution to Jain Yoga with special reference to Yogadristis.

योग दृष्टि के विशेष सन्दर्भ में आचार्य हरिभद्र का जैनयोग को अवदान पर प्रकाश डालिए।

OR/अथवा

Write a detailed note on basic four types of meditation.

ध्यान के मुख्य चार प्रकारों पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखें।

Q. 2. What is Preksha Meditation? Describe its canonical sources.

प्रेक्षाध्यान क्या है? प्रेक्षाध्यान के आगमिक स्रोतों का विवरण करें।

OR/अथवा

Explain Aural colouration based on Uttaradhyayana.

उत्तराध्ययन के आधार पर विवेचन करें।

Q. 3. Explaining the nature of yoga in patanjalis yog sutra and differentiate between sampragyat and asampragyata samadhi.

पातञ्जल योग सूत्र के आधार पर योग के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए संप्रज्ञात एवं असप्रज्ञात समाधि में अन्तर स्पष्ट करें।

OR/अथवा

Explain samadhi and karma sthanas (subject of meditation) as described in Vishuddhi maggo.

विशुद्धिमग्गो में वर्णित समाधि एवं कर्म स्थानों का विवरण करें।

Q. 4. Throw light on material nature of karma and elucidate ten states of karma.

कर्म के भौतिक स्वरूप एवं कर्म की दस अवस्थाओं पर प्रकाश डालें।

OR/अथवा

Write an essay on mutual relation between karma and soul, and process of liberation.

कर्म एवं आत्मा का परस्पर बंधन एवं मुक्ति की प्रक्रिया पर एक निबंध लिखें।

Q. 5. Describe five aspects (samvayas kala, niyati etc) and their functional interdependence.

पाँच समवायों (काल नियति आदि) को समझाते हुए उनके पारस्परिक निर्भरता को विवेचन करें।

OR/अथवा

Explain Jain Karmic theory in light of psychology.

जैन कर्म सिद्धान्त का मनोविज्ञान के संदर्भ में विवेचन करें।

♦♦♦

M.A. PREVIOUS YEAR EXAMINATION, 2011

(Correspondence Course)

Subject : Jainology and Comparative Religion & Philosophy

PAPER - IV : Jain Epistemology and Nyaya

Time : 3.00 Hrs. MM : 80

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Q. 1. Throw light on origin and development of Jain theory of knowledge.
जैन ज्ञान मीमांसा के उद्‌भव एवं विकास पर प्रकाश डालें।

OR/अथवा

'दर्शन' के स्वरूप की व्याख्या करें।

Explain the nature/problem of philosophy.

Q. 2. What is the meaning of indirect perception? Explain perceptual cognition.
परोक्ष ज्ञान का क्या अर्थ है? मतिज्ञान की व्याख्या करें?

OR/अथवा

Explain the nature of sense organs and mind.
इन्द्रिय एवं मन के स्वरूप को स्पष्ट करें ?

Q. 3. Clarify pure and perfect knowledge.
केवलज्ञान को स्पष्ट करें ?

OR/अथवा

Explain clairvoyance and its types.
अवधिज्ञान एवं उसके प्रकारों की व्याख्या करें।

Q. 4. Explain characteristics of Jain logic.
जैन न्याय के लक्षणों की व्याख्या करें ?

OR/अथवा

What is the meaning of logic? Explain the contribution of Jainacharya to this branch ?
न्याय का क्या अर्थ है? जैनाचार्यों का इस शाखा में क्या योगदान है?

Q. 5. Write short notes on any four of the following :
निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए –

(i) Inference / अनुमान
(ii) Recollection / स्मृति
(iii) Valid cognition / प्रमाण
(iv) Object / अर्थ
(v) Mind reading / मनःपर्यवज्ञान
(vi) Verbal testimony / आगम
(vii) Knower / ज्ञाता

♦♦♦

M.A. FINAL YEAR EXAMINATION, 2011
(Correspondence Course)

Subject : Jainology and Comparative Religion & Philosophy

PAPER - V : Jain Agam

Time : 3.00 Hrs. MM : 80

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Q. 1. Explain the concept of Re-birth according to Acaranga Sutra.
आचारांग के अनुसार पुनर्जन्म की अवधारणा का विवेचन कीजिए।

OR/अथवा

Explain the following : निम्न की व्याख्या कीजिए /

(क) जे लोयं अब्भाइक्खइ, जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ।
जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोयं अब्भाइक्खइ।।

(ख) तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं वणस्सइ–सत्यं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइ–सत्यं समारंभावेज्जा, पेवण्णे वणस्सइ–सत्यं समारंभंते समणु जाणेज्जा।

Q. 2. Give the analysis of bondage and freedom from bondage as enumerated in Sutra Kritanga.
सूत्रकृतांग के अनुसार बंधन और मुक्ति का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।

OR/अथवा

Write a critical note on the concept of Niyati Vada on the basis of Sutrakritanga Sutra.
सूत्रकृताङ्ग के आधार पर नियतिवाद की समीक्षा कीजिए।

Q. 3. Give short introduction of Bhagwati Sutra and critically explain Atma-Kartritvavad.
भगवती सूत्र का संक्षिप्त विषयगत परिचय देते हुए आत्म कर्तृत्ववाद की विवेचना प्रस्तुत कीजिए।

OR/अथवा

Prove the soul's body-pervasiveness according to Jain Philosophy.
जैन दर्शन के अनुसार आत्मा के देह परिमाण को सिद्ध करें।

Q. 4. Explain the nature of 'modesty' as described in Uttradhyayana Sutra.
उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर विनय के स्वरूप का विवेचन करें।

OR/अथवा

दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन के प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालते हुए श्रमण जीवन में इसकी महत्ता लिखिए।

Throwing light on the subject matter of the first chapter of Dasvaikalika, write down its importance in the life of a 'Shramana'.

Q. 5. Giving the introduction of the content of Samyasara, write down the Intrinsic.
समयसार का विषय परिचय लिखते हुए इसके निर्धारित पाठ्यांश में वर्णित जीव–अजीव का स्वरूप लिखिए।

OR/अथवा

Explain the following : / निम्न की व्याख्या कीजिए

(क) सुदपरि चिदाणुभूदा सव्वस्स वि काम भोगबंधकहा।
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स।।

(ख) जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णयं णियदं।
अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्धणयं वियाणीहि।। ♦♦♦

M.A. FINAL YEAR EXAMINATION, 2011

(Correspondence Course)

Subject : Jainology and Comparative Religion & Philosophy

PAPER - VI : Anekanta, Naya, Nikshepa and Syadavada

Time : 3.00 Hrs. MM : 80

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Q. 1. Explain the nature of seven nayas (view points) according to Anuyogadvara sutra.
अनुयोगद्वार सूत्र के आधार पर सप्त नयों के स्वरूप का निरूपण कीजिये।

OR/अथवा

Explain the concepts of dravya, kshetra, kala and bhava according to Bhagavati Sutra.
भगवतीसूत्र के आधार पर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के स्वरूप की विवेचना कीजिये।

Q. 2. Explain the nature of Vyajnaparyaya and Artha Paryaya ?
व्यञ्जन पर्याय और अर्थपर्याय का स्वरूप स्पष्ट कीजिये।

OR/अथवा

Discuss the unity and difference between Jiva and Pudgala according to various view points.
जीव एवं पुद्गल के भेदाभेद को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट कीजिये।

Q. 3. Explain the nature of reality according to the doctrine of Anekantavada.
अनेकान्तवाद के आधार पर वस्तु या सत् का स्वरूप स्पष्ट कीजिये।

OR/अथवा

How does the doctrine of Anekantavada synthesise different philosophical view points?
अनेकान्तवाद दार्शनिक मतभेदों का समन्वय किस प्रकार करता है?

Q. 4. Discuss the seven-alternatives (Bhangas) of Sapta-Bhangi. Why only the seven bhangas in Saptabhangi?
सप्तभंगी के सात भंगों को स्पष्ट कीजिये। सप्तभंगी में सात ही भंग क्यों होते हैं?

OR/अथवा

Discuss the real nature of the thing and the resultant nature of thing.
वस्तु के स्वभाव लक्षण (स्व–स्वरूपत्व) और विभाव लक्षण (पररूपत्व) को स्पष्ट कीजिये।

OR/अथवा

Explain the mutual relation between Anekantavada, Syadavada and Suptabhangi.
अनेकान्तवाद, स्याद्वाद और सप्तभंगी के पारस्परिक सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिये।

Q. 5. Discuss the origin and development of Anekantavada, Syadavada and Saptabhangi.
अनेकान्तवाद, स्याद्वाद और सप्तभंगी के उद्भव एवं विकासयात्रा को समझाईये।

OR/अथवा

Write short notes on any two of the following :
निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिये –

(i) Four kinds of Nikshepa / चार प्रकार के निक्षेप
(ii) Kinds of Nayas / नयों के प्रकार
(iii) Pressible Unex Bhanga / अव्यक्त भंग

♦♦♦

M.A. FINAL YEAR EXAMINATION, 2011
(Correspondence Course)
Subject : Jainology and Comparative Religion & Philosophy
PAPER - VII :
Jain Religion Philosophy and Indian Philosophy

Time : 3.00 Hrs. MM : 80

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.
निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Q. 1. Explain the nature of 'Sat' according to Jain Philosophy.
जैन दर्शन के अनुसार 'सत' के स्वरूप की व्याख्या कीजिए?

OR/अथवा

Explain the theory of cause and effect according to Buddha Philosophy.
बौद्ध दर्शन के अनुसार कारण–कार्य सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

Q. 2. Throw light on the nature and importance of soul in Vedanta and Samkhya philosophy.
वेदान्त एवं सांख्य दर्शन में आत्मा के स्वरूप एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

OR/अथवा

Discuss the theory of non-possession according to Jain and Buddha philosophy.
बौद्ध एवं जैन दर्शन के अनुसार अपरिग्रह का विवेचन कीजिए।

Q. 3. Write an essay on 'Vrata' according to Jain and Yoga philosophy.
जैन एवं योगदर्शन के अनुसार व्रत के स्वरूप पर निबन्ध लिखिए।

OR/अथवा

Throw light on the nature of 'Karma' according to Buddha philosophy.
बौद्ध दर्शन के अनुसार कर्म के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

Q. 4. Write in detail the nature of Pramana according to Nyaya and Mimamsa Philosophy.
न्याय एवं मीमांसा दर्शन के अनुसार प्रमाण का स्वरूप विस्तार से लिखिए।

OR/अथवा

Describe the Anumana Pramana according to Buddha Philosophy.
बौद्ध दर्शन के अनुसार अनुमान प्रमाण की व्याख्या कीजिए।

Q. 5. Write short notes on any four of the following :
निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिए –

(1) Pudgala / पुद्गल
(2) Meditation-Yoga / ध्यान–योग
(3) Sahaja Yoga / सहज योग
(4) Knowledge / ज्ञान
(5) Bhakti-Gita / भक्ति–गीता

♦♦♦

M.A. FINAL YEAR EXAMINATION, 2011
(Correspondence Course)
Subject : Jainology and Comparative Religion & Philosophy
PAPER - VIII :
Jain Religion Philosophy and Non-Indian Philosophy

Time : 3.00 Hrs. MM : 80

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Q. 1. Compare the Jain concept of soul with the Leibnitz's monads and explain critically the points of agreements, and disagreements.
जैन आत्मवाद के साथ लाइबनीज के चिदणुवाद की तुलना करें, साम्य–वैषम्य की समीक्षा करें।

OR/अथवा

Prove whether Jain Ethics is absolute in principle or relative with the Kantian ethics.
जैन आचार शास्त्र काण्ट के नीतिशास्त्र की तरह निरपेक्ष है या सापेक्ष, स्पष्ट करें।

Q. 2. Explain the concept of soul in Descartes philosophy and compare it with Jain concept of soul ?
डेकार्ट के दर्शन में आत्मस्वरूप की जैन दर्शन में मान्य आत्मस्वरूप से तुलना करें।

OR/अथवा

Explain mind-body relation in the philosophy of Leibnitz, Spinoza and Jain?
आत्मा–शरीर सम्बन्ध के विषय में लाइबनीज, स्पिनोजा एवं जैन दर्शन की मान्यता को स्पष्ट करें?

Q. 3. Whether Hume accepts the theory of causation or not? Along with this highlight the Kantes causation theory ?
कारणता के सिद्धान्त को ह्यूम स्वीकार करता है या नहीं ? स्पष्ट करें एवं काण्ट के कारणता सिद्धान्त पर प्रकाश डालें?

OR/अथवा

Explain the concept of world / universe in the view of Berkley, Jainism and Platinus ?
जगत् सम्बन्धी विचार के संदर्भ में बर्कले, जैन एवं प्लाटिनस की विचारधारा को स्पष्ट करें?

Q. 4. Compare Jainism with Muslims in all aspects ?
जैन धर्म एवं इस्लाम धर्म की तुलना सर्वांगीण दृष्टि से करें ?

OR/अथवा

Deal the points of overlaping between Suffism and Jainism ?
जैन धर्म एवं सूफी धर्म में साम्य बिन्दुओं की चर्चा करें ?

Q. 5. How anuvrat can help in creating healthy social structure?
अणुव्रत किस प्रकार समाज संरचना में अपनी भूमिका निभा सकता है?

OR/अथवा

Explain the relevance of Jain doctrine in Environmental protection.
पर्यावरण सुरक्षा में जैन सिद्धान्तों की क्या प्रासंगिकता है?

♦♦♦